राजस्थान में पर्यटन उद्योग–विकास एवं सम्भावनाएँ

डॉ. खेमचन्द गुर्जर
व्याख्याता
आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध विभाग
एस.एन.के.पी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नीमकाथाना (राजस्थान)

वर्तमान समय में परिवहन एवं संचार माध्यमों व सुविधाओं में जो क्रांति आई है, उसके फलस्वरूप सम्पूर्ण जगत की दूरियां निकटता में परिणित हो रही हैं। अतः पर्यटन का आनन्द उठाने के प्रति लोग दिनों दिन अधिक उन्मुख होते जा रहे हैं। पर्यटन उद्योग विश्व का सर्वाधिक द्रुतगामी संवर्धित होने वाला उद्योग है। विश्व पर्यटन संगठन ने भविष्यवाणी की है कि आने वाले दशकों में पर्यटन उद्योग विश्व में सबसे बड़े उद्योग के रूप में उभरेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था में भी पर्यटन उद्योग का महत्व कम नहीं हैं तथा यहां पर्यटन के विकास की अपार सम्भावनाएं हैं। भारत भी विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय स्थलों में 16 वां स्थान रखता है।

पर्यटन उद्योग रोजगार एवं विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन उद्योग में निवेश के अनुपात में रोजगार के अवसर अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। इस उद्योग का श्रम–पूंजी अनुपात काफी ऊंचा है। पर्यटकों को उपलब्ध कराई जाने वाली उक्त सेवाओं के परिणामस्वरूप पर्यटन उद्योग से टूयरिस्ट गाइडों, ट्रेवल एजेन्टों, ड्राईवरों, होटल वालों, हस्तशिल्पियों व दस्तकारों को पर्याप्त रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। साथ ही राज्य में विकास हेतु आवश्यक संरचनात्मक ढांचे (इन्फ्रास्ट्रक्चर) में वृद्धि व विकास होने से भी अन्य उद्योग धन्धे पनपते हैं, जो रोजगार अवसरों में सकारात्मक अवसर प्रदान करते हैं। इस प्रकार पर्यटन उद्योग में प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों प्रकार से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक 8 विदेशी पर्यटकों पर राज्य में एक व्यक्ति को रोजगार मिल सकता है तथा प्रत्येक 32 स्वदेशी पर्यटकों पर एक व्यक्ति के लिये रोजगार का मार्ग प्रशास्त होता है। भारत में पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान अभिन्न स्थान रखता है। यहां तक कि पर्यटन उद्योग राजस्थान की अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड बन सकता है।

राजस्थान अपने अद्‌भुत प्राकृतिक सौन्दर्यता एवं शैली के कारण विश्व के पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहां की झीलें, पर्वत, पक्षी विहार, वन्य जीव क्षेत्र, रेगिस्तान के सुन्दर रेत के धोरे, डेजर्ट पार्क, प्राचीन किले, हवेलियां, गढ़ महल, ऐतिहासिक स्मारक, दरगाह, मन्दिर, स्वर्णिम ट्राइएंगल, डेजर्ट ट्राइएंगल आदि विशेष आकर्षण के कारण रहे हैं तो दूसरी ओर यहां के रंग बिरंगे त्यौहार, मेले, रीति–रिवाज, परम्परा एवं वेशभूषा, संगीत, नृत्य तथा कलाकृतियां भी विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर लुभाने में पीछे नहीं हैं। उपलब्ध आंकड़ो से जाहिर है कि भारत भ्रमण के लिये आने वाले विदेशी पर्यटकों में प्रत्येक तीसरा पर्यटक राजस्थान अवश्य आता है। विगत वर्षों में राजस्थान में पर्यटकों विशेषतया विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जहां 1971 में राजस्थान में स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या 9. 22 लाख थी जिनमें से 8.80 लाख स्वदेशी व मात्र 0.42 लाख विदेशी पर्यटक थे। वर्ष 1991 में यह संख्या बढ़कर कुल 50 लाख हो गई जिनमें से 45.50 लाख स्वदेशी व 4.50 लाख विदेशी पर्यटक थे। वर्ष 2001 में यह संख्या 83.65 लाख हो गई जिनमें से 6.08 लाख विदेशी पर्यटक थे। राजस्थान में पर्यटक की दृष्टि से

2004 का वर्ष काफी सफल रहा। वर्ष 2004 में 160 लाख स्वदेशी व 9 लाख 53 हजार विदेशी पर्यटक राजस्थान आये।

इस प्रकार प्रति वर्ष राज्य को औसतन 3 करोड़ रूपये से अधिक राशि विदेशी मुद्रा के रूप में प्राप्त होती है। इस उद्योग की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि राष्ट्रीय सम्पति का निर्यात किये बिना ही करोड़ो रूपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सकती है। इस व्यवसाय से अर्जित विदेशी मुद्रा का केवल 7 प्रतिशत भाग ही स्वयं के उपयोग पर व्यय होता है तथा शेष 93 प्रतिशत विदेशी मुद्रा हमारे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार घाटे को कम करने के उपयोग में ली जाती है।

राजस्थान में पर्यटन विकास न केवल रोजगार व विदेशी मुद्रा अर्जन का स्रोत है बल्कि यह संस्कृति की रक्षा एवं पोषण के साथ–साथ स्थानीय कलाकारों, नर्तकों, रंगकर्मियों को भी बढ़ावा देता है। यहां पर मेलों व त्यौहारों पर जो नृत्य व संगीत के कार्यक्रम होते हैं उनका आनन्द उठाने देशी–विदेशी पर्यटक यहां आते हैं। जैसे– जैसलमेर का मरू मेला वास्तव में काफी अद्भुत किस्म का माना जाता है जो प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसी प्रकार आमेर में हाथी सफारी तो जैसलमेर में ऊंट सफारी पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट करने में सहायक रही है।

विदेशी पर्यटकों के स्थानीय नागरिकों, सांस्कृतिक कलाकारों एवं ट्यूरिस्ट व्यवसाय से जुड़े अन्य लोगों से मैत्री पूर्ण सम्बन्ध एक दूसरे की सभ्यता एवं संस्कृति के आदान प्रदान का सुअवसर प्रदान करते हैं। अतः पर्यटन उद्योग का विकास राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व सद्भावना में वृद्धि करने में भी योगदान देता है जिससे वसुधैवः कुटुम्बकम् की भावना जागृत होती है।

उपर्युक्त विवेचन स्पष्ट करता है कि राज्य में पर्यटन का विकास राजस्थान की अर्थव्यवस्था हेतु एक सुदृढ़ आधार स्तम्भ सिद्ध हो सकता है। परन्तु इसके विकास में निम्नलिखित व्यावहारिक कठिनाईयाँ भी इसके समक्ष आ रही हैं।

- प्रशिक्षित एवं कुशल ट्युरिस्ट गाइड़ों के अभाव व पर्यटकों को पर्यटन स्थल की सही व पूर्ण जानकारी नहीं मिल पाती है जिससे पर्यटकों का कई स्थानों के प्रति आकर्षण कम रहता है। राज्य में जो गाइड जिन पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध भी हैं, वे भी एक या दो भाषाओं का ही ज्ञान रखते हैं अतः वे सभी पर्यटकों को सन्तुष्ट करने में सक्षम नहीं होते है।
- कई बार विदेशी पर्यटकों को स्थानीय असामाजिक तत्वों के हाथों लूटपाट एवं धोखाधड़ी का शिकार भी होना पड़ता है।
- केन्द्र व राज्य सरकार के पुरातत्व विभाग में उचित सामंजस्य नहीं होने से कई ऐतिहासिक स्मारक व स्थल जीर्ण–शीर्ण स्थिति में हैं जिनके रख–रखाव की ओर समुचित ध्यान नहीं दिये जाने से पर्यटन स्थलों की हालत खराब होती जा रही हैं।
- पंच सितारा होटलों सम्बन्धी सुविधा अधिकांशतः राजस्थान के बड़े शहरों में ही उपलब्ध है। छोटे–छोटे महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों पर यह सुविधाएं नहीं मिलने से पर्यटकों को ठहरने सम्बन्धी कठिनाई आती है।

- राजस्थान में अभी भी कुछ इस प्रकार के पर्यटक स्थल हैं जहां पर सुगम और सुविधाजनक द्रुतगामी यातायात सुविधाओं का अभाव है। झीलों की सुव्यवस्थित साफ–सफाई न होने से भी पर्यटकों का इस ओर आकर्षण कम पाया जाता है।
- पर्यटक स्थलों की स्वच्छता एवं सुन्दरता कायम करने के प्रति स्थानीय नागरिकों में अभिरूचि व नैतिक दायित्व की भावना कायम करने की आवश्यकता है ताकि वे पर्यटन स्थलों को साफ सुथरा रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें सकें।

पर्यटन उद्योग के विकास हेतु निम्न सकारात्मक उपाय कारगर सिद्ध हो सकते हैं :–

- ऐसे पर्यटन स्थलों को चिन्हित किया जाये जो अभी तक विदेशी पर्यटकों की जानकारी व पहुंच से दूर रहे हैं तथा सड़क, बिजली, पर्यावरणीय स्वच्छता, परिवहन सुविधाओं का विकास करने की आवश्यकता है।
- पर्यटकों के मार्ग में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों जैसे असुरक्षा की भावना, अज्ञानता का अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति, मार्गदर्शकों का असंतोषजनक व्यवहार, दलाली, कमीशन आदि को दूर करने हेतु सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए।
- प्राचीन पर्यटक स्थलों की उचित देखभाल एवं रखरखाव पर सरकार को समुचित ध्यान देना चाहिए।
- पर्यटन स्थलों पर अन्य आवश्यक पर्यटक सुविधाओं जैसे बैकिंग, संदेश वाहन सुविधाओं, व मनोरंजन हेतु पार्को का योजनाबद्ध ढंग से विकास किया जाना चाहिये।
- देश व विदेशों में अधिकाधिक विज्ञापन, साहित्य और सार्वजनिक प्रचार–प्रसार द्वारा पर्यटकों को अधिक से अधिक आकर्षित करने का प्रयास करना चाहिये।
- राज्य के हवाई अड्डों को अंतर्राष्ट्रीय सेवाओं से जोड़ने हेतु दीर्घकालीन रणनीति तैयार की जानी चाहिये।
- राज्य सरकार को ऐसा वातावरण बनाना चाहिये कि विदेशी पर्यटक अपनी जान मान व इज्जत की सुरक्षा के प्रति निश्चिन्त हो सकें। यद्यपि राजस्थान में आने वाले विदेशी पर्यटक स्वयं को अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं। इस दिशा में राजस्थान सरकार पर्यटन पुलिस के गठन की योजना एक प्रशसंनीय उपाय कहा जा सकता है।
- भारतीय दर्शन से प्रेरित अतिथि देवो भवः की अवधारणा को जन सामान्य के दिमाग में बिठाने की कोशिश की जानी चाहिये ताकि वे पर्यटकों की देखभाल एवं सेवा पूर्ण निष्ठा एवं जिम्मेदारी के साथ कर सकें। पर्यटकों को भरपूर आतिथ्य सत्कार, आत्मीयता व स्नेह मिलता है तो वे मधुर स्मृतियां अपने साथ ले जाते हैं तथा अन्य आने वाले पर्यटकों को राजस्थान भ्रमण हेतु प्रोत्साहित करते हैं।
- साथ ही प्रशिक्षित गाइडों की सुविधा अधिकाधिक पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध करवाने की कोशिश की जानी चाहिये।

राजस्थान में पर्यटन विकास हेतु भरसक सरकारी प्रयास किये भी जा रहे हैं। राजस्थान में पर्यटन को व्यापक प्रोत्साहन देने के लिये राजस्थान सरकार ने पर्यटन व्यवसाय को उद्योग घोषित कर दिया है। सरकार

के इस निर्णय से एक उद्योग के रूप में व्यापक सुविधाएं जुटाना सम्भव होगा एवं पर्यटन उद्योग का और तीव्र गति से विकास हो सकेगा। राज्य में पर्यटन स्थलों पर आवास व्यवस्था व विश्राम स्थलों की सुविधा भी पर्यटन विभाग ने निजी क्षेत्र के होटलों व सरकारी आवासगृहों की स्थापना से की है। साथ ही सरकार द्वारा शुरू की गई 'हेरिटेज होटल' योजना के माध्यम से भी इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत 75 वर्ष पुराने किले, गढ़, हवेलियां व आवासों को यदि उनके मालिक चाहे तो हेरिटेल होटल के रूप में परिवर्तित करा सकते हैं। राज्य में इनकी संख्या 100 से अधिक होने का अनुमान है।

पर्यटन विभाग द्वारा यहां के पर्यटन स्थलों सम्बन्धी साहित्य भी पर्यटकों को उपलब्ध करवाने की कोशिश की जाती है। इसी प्रकार विज्ञापन व फिल्म प्रदर्शन भी किया जाता है जैसे राज्य के अनुमोदित हेरिटेज होटलों के प्रचार के उद्देश्य से 'हेरिटेज होटल आफ राजस्थान' पर एक फिल्म का निर्माण कराया है।

राज्य में सितम्बर, 1991 से पेईंग गेस्ट योजना चालू की गई। प्रारम्भ में यह तीन शहरों में चालू की गई जिसे बाद में तेरह शहरों मे चालू किया गया।

राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा परिवहन सुविधाएं एवम् पैकेज ट्यूर सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई जाती हैं जिनमें दिल्ली व उदयपुर से संचालित पैकेज टूर प्रमुख है। इसके अलावा सितम्बर, 1995 में बड़ी लाइन पर शाही रेलगाड़ी ''पैलेस ऑन व्हील'' भी चलाई गई है जिसे संसार की दस सर्वश्रेष्ठ रेलयात्राओं में से एक माना गया है। पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु ''हाथी सफारी' केमल सफारी, होर्स सफारी तथा केनाल बोटिंग आदि कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। राजस्थान में पहली बार पर्यटन पर अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मेला ''इन्वेस्ट्यूर 1995'' भारतीय उद्योग परिसंघ की ओर से जयपुर के बिड़ला सभागार में 1 से 4 दिसंबर, 1995 को आयोजित किया गया। इसमें पर्यटन से जुड़े विभिन्न विषयों पर गोष्ठियां आयोजित की गई जिससे राजस्थान में पर्यटन विकास को नया आयाम मिला है।

राजस्थान में राज्य सरकार द्वारा पर्यटन विकास पर आंठवी पंचवर्षीय योजना में 38.89 करोड़ रूपये व्यय करने का प्रावधान रखा गया जबकि नवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) में पर्यटन विकास पर 303.10 करोड़ रूपये व्यय करने का प्रावधान किया गया जो आंठवी योजना में किये गये प्रावधान के मुकाबले आठ गुना अधिक है। राज्य सरकार ने नई दिल्ली की टाटा सलाहकार सेवा के सहयोग से पर्यटन विकास हेतु 1992 करोड़ रूपये का एक मास्टर प्लान तैयार किया है जिसके अनुसार नवीं योजना के अन्त तक राज्य में 86 लाख पर्यटक आने का लक्ष्य रखा गया जिनमें से 11 लाख विदेशी पर्यटकों की संख्या होने की संभावना व्यक्त की गई। दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–2007) के अन्तर्गत वित्त वर्ष 2003–04 के बजट में 13 करोड़ रूपया पर्यटन विकास पर व्यय करने का प्रावधान रखा गया। पर्यटन विभाग द्वारा 2007 में राजस्थान पर्यटन ईकाई नीति जारी की गई।

राज्य का पर्यटन विभाग नई सहस्त्राब्दी में जिन अभिनव योजनाओं की शुरूआत करने की योजना बना रहा है उनमें राज्य के शानदार इतिहास की पिछले एक हजार वर्षों में हुई प्रमुख घटनाओं को समेट कर इनमे सम्बद्ध कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करना, राज्य की प्रसिद्ध झीलों में ''पैलेस ऑन वेव्स'' अर्थात् (लहरों पर राजमहल), चम्बल नदी एवं इन्दिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र के जैसलमेर व बीकानेर जिलों में नहरों में नौकायन, मध्यम आय वर्ग के लिए एक नई ''पैलेस ऑन व्हील्स'' रेलगाड़ी शुरू करना, जयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय

पतंगबाजी एवं पक्षी अवलोकन समारोह आदि शामिल हैं। साथी ही राज्य सरकार की प्रस्तावित नवीन नीति के अन्तर्गत ग्रामीण एवं पर्यावरणीय पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु साहसिक, शैक्षणिक एवं फार्म ट्यूरिज्म को प्रोत्साहित किया जायेगा ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार अवसरों में वृद्धि किया जाना सम्भव हो सके। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने के क्रम में राज्य सरकार का यह महत्वूपर्ण सराहनीय कदम कहा जा सकता है। इस दिशा में निजी क्षेत्र एवं स्वैच्छिक संगठनों का सहयोग एवं सहभागिता भी अपेक्षित कही जा सकती है।

संदर्भ सूची

I. पुस्तकें :–

1. बी.एल. ओझा, राजस्थान की अर्थव्यवस्था, आदर्श प्रकाशन, जयपुर, 2007–08
2. बढ़ाना, मेहरा एवं अग्रवाल, राजस्थान की अर्थव्यवस्था, नाकोड़ा पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर
3. एल.आर. भल्ला, राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशनस्, अजमेर
4. लक्ष्मीनारायण नाथूरामका, राजस्थान की अर्थव्यवस्था, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर
5. रतन दीप सिंह, इन्फ्रास्ट्रक्चर ऑफ ट्यूरिज्म इन इण्डिया, कनिष्क पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 1996

II. रिपोर्ट, सामयिकी एवं समाचार पत्र–पत्रिकाएं –

1. इकानॉमिक रिव्यू (राजस्थान विभिन्न वर्ष)
2. योजना (हिन्दी मासिक) नई दिल्ली
3. उद्योग व्यापार पत्रिका (हिन्दी मासिक) नई दिल्ली
4. राजस्थान पत्रिका (दैनिक समाचार पत्र)
5. दैनिक भास्कर (दैनिक समाचार पत्र)
6. प्रगति प्रतिवेदन, पर्यटन विभाग, राजस्थान